भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-1772

उत्तर देने की तारीख-10/03/2025

काशी तमिल संगमम 3.0

†1772. **श्री प्रवीण पटेल:**

श्री मुकेशकुमार चंद्रकांत दलाल:

श्री प्रदीप कुमार सिंहः

श्री योगेन्द्र चांदोलिया:

श्री शंकर लालवानी:

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) इस वर्ष युवाओं की भागीदारी पर विशेष ध्यान देते हुए क्या उपाय किए जा रहे हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि तमिलनाडु के युवा प्रतिनिधियों को कार्यक्रम की गतिविधियों में भाग लेने के लिए सार्थक अवसर प्रदान किए जा सकें;

(ख) काशी तमिल संगमम 3.0 का वाराणसी और संबंधित क्षेत्रों की स्थानीय अर्थव्यवस्था पर, विशेष रूप से पर्यटन, व्यापार और कारीगरों की भागीदारी के संदर्भ में, क्या अपेक्षित आर्थिक प्रभाव होगा;

(ग) क्या काशी तमिल संगमम 3.0 में तमिलनाडु और काशी के विद्वानों के बीच बौद्धिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से भाषा विज्ञान, कला और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में कोई विशिष्ट शैक्षणिक और अनुसंधान आधारित पहल शुरू की जाएगी और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) इस कार्यक्रम को देश भर में आम जनता के लिए सुलभ बनाने के लिए उठाए जा रहे विभिन्न कदमों का ब्यौरा क्या है; और

(ङ) उक्त कार्यक्रम के तहत अनुसंधान और नवाचार पर केंद्रित किसी विशेष कार्यक्रम या पहल का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री

(डॉ. सुकान्त मजूमदार)

(क) से (ङ): 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की सिफारिशों के अनुरूप भारत सरकार द्वारा काशी तमिल संगमम का तीसरा संस्करण दिनांक 15 से 24 फरवरी, 2025 तक वाराणसी में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य देश के दो प्राचीन ज्ञान केन्द्रों अर्थात् वाराणसी और तमिलनाडु के बीच सदियों पुराने जुड़ाव को फिर से प्राप्त करना और

सुदृढ़ करना है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी इस कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए नोडल संस्थाएं हैं।

इस वर्ष के आयोजन का मुख्य विषय ऋषि अगस्त्य द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए योगदान पर प्रकाश डालना है। इसके अतिरिक्त, यह आयोजन प्रयागराज में महाकुंभ तथा अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर के दर्शन के समय ही हुआ। इस प्रकार, भारत सरकार ने इस वर्ष काशी तमिल संगमम गतिविधियों में युवाओं पर ध्यान केन्द्रित करने का निर्णय लिया है। युवाओं को हमारे प्राचीन ऋषियों और मुनियों के बारे में जागरूक करने के लिए विश्वविद्यालयों में ऋषि अगस्त्य और उनके योगदान पर संगोष्ठियां आयोजित की गईं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास को विभिन्न श्रेणियों के प्रतिनिधियों के चयन के दौरान युवाओं पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी गई। इसके अतिरिक्त, देश भर के विभिन्न केंद्रीय विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत तमिल मूल के 5 से 10 छात्रों को काशी तमिल संगमम 3.0 कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर दिया गया। इससे उन्हें वाराणसी के ज्ञान और संस्कृति, संगम, प्रयागराज में पवित्र स्नान और अयोध्या में भगवान राम के दर्शन का अनुभव प्राप्त होगा।

10 दिनों की अवधि के दौरान, वाराणसी, प्रयागराज और अयोध्या में 1500 से अधिक प्रतिभागियों के भ्रमण के कारण, काशी तमिल संगमम 3.0 का क्षेत्र में सकारात्मक आर्थिक प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त, उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से वाराणसी के नमो घाट पर आयोजित प्रदर्शनी में, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, पर्यटन, वस्त्र जैसे विभिन्न मंत्रालयों और केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान (सीआईसीटी), राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी), केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), पत्र सूचना कार्यालय (पीआईबी), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) आदि संस्थाओं द्वारा स्टॉल लगाए गए थे, जिनमें अधिक संख्या में स्थानीय आगंतुक आए जिससे उत्पादों की बिक्री हुई एवं व्यापार के अवसरों में वृद्धि हुई।

काशी तमिल संगमम गतिविधियों के एक भाग के रूप में, इस वर्ष 6 शैक्षणिक सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें काशी तमिल संगमम प्रतिनिधियों की छह श्रेणियों में से प्रत्येक श्रेणी के 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। समान संख्या में स्थानीय लोगों को भी आमंत्रित किया गया और उन्हें विभिन्न विषयों से संबंधित चर्चा में शामिल किया गया, जिससे उनके बीच एक सार्थक संवाद हुआ। आईआईटी-बीएचयू के एक प्रोफेसर ने सत्रों का संचालन किया और विभिन्न सत्रों के दौरान चर्चा में भाग लेने के लिए संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। प्रतिनिधियों ने विशेषज्ञों के साथ संवाद भी किया तथा विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डाला।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से इस आयोजन का पूरे देश में व्यापक प्रचार किया गया, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में कई स्थानों पर होर्डिंग्स लगाई गईं तथा कई राज्यों में तमिल संघों के माध्यम से ऋषि अगस्त्य पर संगोष्ठियां आयोजित की गईं। इनके अतिरिक्त, भारतीय मिशनों के माध्यम से विदेशों में भी ऋषि अगस्त्य पर संगोष्ठियां/कार्यशालाएँ आयोजित करके प्रचार किया गया।

******